ग़ज़ल -04

- रविशंकर श्रीवास्तव

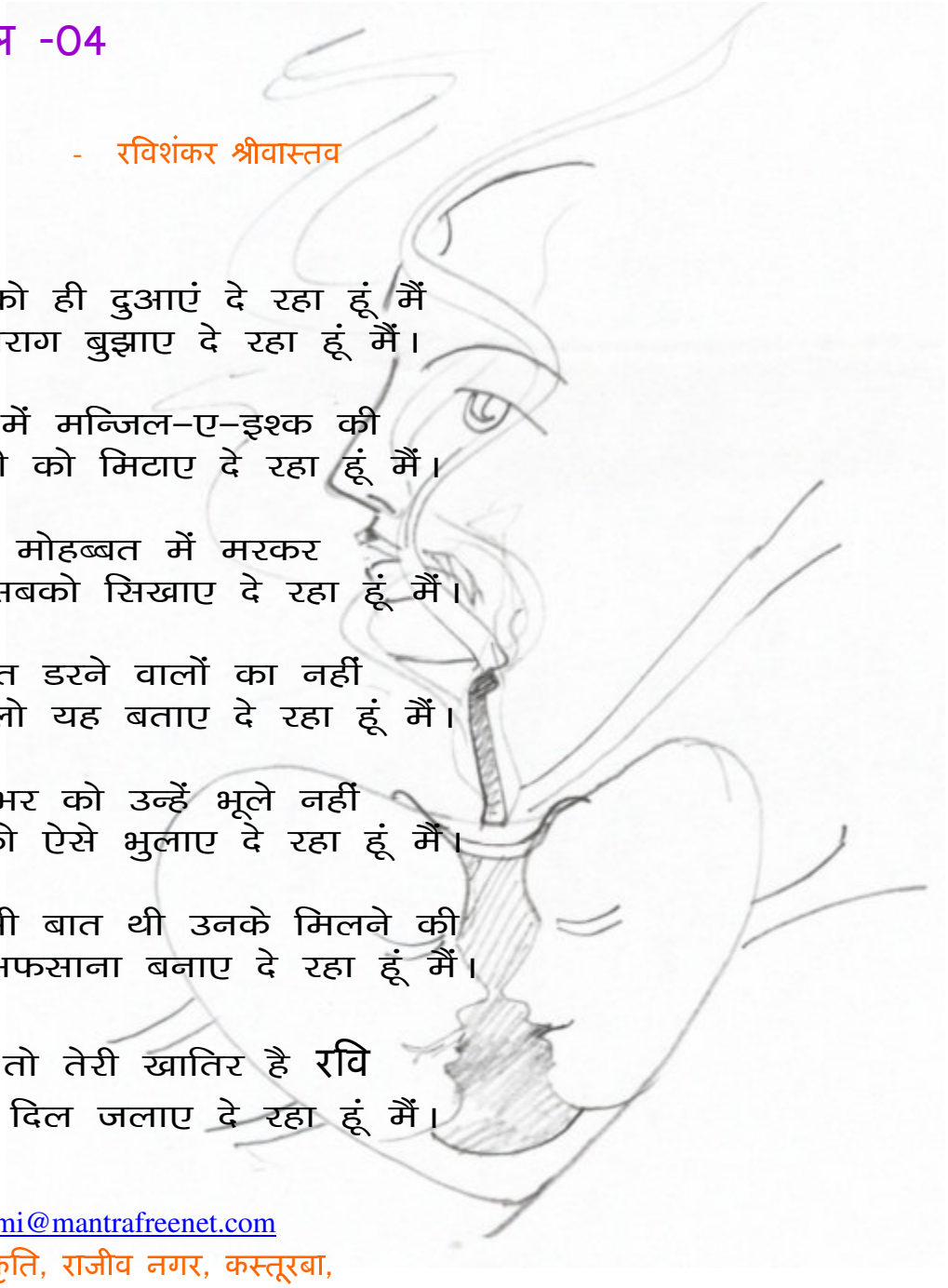

खुदा को ही दुआएं दे रहा हूं मैं
जले चराग बुझाए दे रहा हूं मैं।

चाहत में मन्जिल–ए–इश्क की
खुद ही को मिटाए दे रहा हूं मैं।

राह–ए मोहब्बत में मरकर
वफा सबको सिखाए दे रहा हूं मैं।

मोहब्बत डरने वालों का नहीं
जान लो यह बताए दे रहा हूं मैं।

लम्हे भर को उन्हें भूले नहीं
खुद को ऐसे भुलाए दे रहा हूं मैं।

जरा सी बात थी उनके मिलने की
और अफसाना बनाए दे रहा हूं मैं।

इतना तो तेरी खातिर है रवि
अपना दिल जलाए दे रहा हूं मैं।

raviratlami@mantrafreenet.com
100, सुकृति, राजीव नगर, कस्तूरबा,
रतलाम म.प्र. 457001